International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

भारतीय संगीत में इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्रों का प्रचलन

(परम्परा एवं धरोहर के विशेष सन्दर्भ में)

शोधार्थी– बृजेश कुमार
महात्मा गॉधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय
सतना मध्य प्रदेश

''प्रयोजनमनुदिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते।''

बिना किसी विशिष्ट प्रयोजन के कोई भी व्यक्ति किसी कार्य में प्रवृत्त नही होता तब शोध जैसे महत्वपूर्ण कार्य करने के पीछे कोई विशेष प्रयोजन होता है। संगीत विषय में शोध कार्य अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि संगीत एक मात्र मनोरंजन का साधन न होकर समस्त जनमानस के दुःखों एवं शोकों को दूर करने की प्राकृतिक औषधि है।

संगीत तक प्रदर्शनात्मक कला होते हुए भी एक विद्या की भांति अध्ययन–अध्यापन का विषय भी रहा है। यह एक ''ललित कला'' होते हुए भी विद्या इसलिए मानी जाती है कि यह निश्चित सिद्धान्तों पर आधारित है। यह सिद्धान्त ही शास्त्र का निर्माण करते हैं।

आज भारतीय संगीत का जो रूप हमारे सम्मुख उपस्थित है वह यकायक किसी की खोज या बौद्धिक उपज द्वारा निर्माण नहीं हुआ। उसके मूलरूप में निरन्तर वृद्धि और परिवर्तन होते–होते ही उसका वर्तमान स्वरूप निश्चित हुआ है। वर्तमान हिन्दुस्तानी संगीत एक अत्यन्त विस्तृत और सुदृढ़ परम्परा लेकर नवीन युग की ओर बढ़ रहा है। प्रायः शास्त्रीय संगीत पहले मंदिरों, गिरिजाघरों, राजा–महाराजाओं के दरबारों या छोटी–छोटी महफिलों के सीमित दायरे में बंधा हुआ था तथा उस समय कलाकारों की प्रस्तुति को सुरक्षित एवं

संरक्षित रखने का कोई भी साधन नहीं था। जिससे उन कलाकारों के साथ ही उनकी कला का भी अंत हो जाता था, परन्तु इलेक्ट्रानिक माध्यमों की सुविधा से शास्त्रीय संगीत को संरक्षण प्राप्त हुआ और शास्त्रीय संगीत के प्रसार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

वैज्ञानिकता ने जहां एक ओर मनुष्य के जीवन के सम्भावित सामान्य पक्षों को प्रभावित किया है वहीं भारतीय संस्कृति एवं कला भी उसके प्रभाव से अछूती न रही। कारण संगीत का क्षेत्र भी प्रभावित हुआ, संगीत के क्षेत्र में इलेक्ट्रानिक वाद्यों ने विभिन्न प्रकार से प्रभावित किया जिसमें विभिन्न प्रकार के स्वर विस्तारक यन्त्र तथ विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रानिक यन्त्र जैसे सिन्थेसाईजर, इलेक्ट्रानिक तबला इलेक्ट्रानिक गिटार, इलेक्ट्रानिक तानपुरा, इलेक्ट्रानिक सुनादमाला, इलेक्ट्रानिक वीणा, आक्टोपैड आदि के सम्मेलन से संगीत के शास्त्र एवं क्रियात्मक दोनों पक्षों को समृद्ध बनाने में अत्यन्त सहयोग मिला जिससे संगीत की शिक्षा एवं प्रदर्शन सभी कुछ प्रभावित हुए एवं संगीत कला घरानों के सीमित दायरें से निकलकर जन–साधारण तक पहुॅची।

आज यदि हम वाद्य संगीत पर पड़े प्रभावों पर दृष्टिगत करें तो देखते हैं कि वैश्वीकरण के फलस्वरूप कंठ संगीत की अपेक्षा वाद्य संगीत को अधिक हानियां हुई हैं। आज अनेक इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्र बाजार में उपलब्ध हैं और लोगों को आकर्षित भी कर रहें हैं जिसके परिणामस्वरूप हमारे भारतीय संगीत के पारस्परिक वाद्य लुप्त होने की कगार पर है या लुप्त हो चुके हैं। आज सारंगी, बैंजों, इसराज, दिलरूबा जैसे अनेक पारस्परिक वाद्य यदा–कदा ही सुनाई पड़ते हैं। हालांकि चलचित्रों के प्रभाव में सितार, गिटार, वायलिन आदि वाद्यों के लिए युवा पीढ़ी में अभी भी आकर्षण प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है। ये अलग बात है कि आज के युवा समय एवं धैर्य की कमी के कारण इस वाद्यों को बजाने में कम–से–कम

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

समय में पारंगत हो जाना चाहते हैं जो संभव नहीं है। परिणामस्वरूप कम ही लोग इस क्षेत्र में टिक पातें हैं।

आजकल वादन के तौर तरीको में भी काफी परिवर्तन आ गया है इसकी वजह से भी कई पारंपरिक वाद्यों का धीरे–धीरे लोप होता जा रहा है। सरोद, सारंगी, दिलरूबा, सुरबहार, रूद्रबीन नक्कारा, शहनाई, पखावज इत्यादि वाद्यों के तो न अब बहुत ज्यादा जानकार रह गये है और न ही उन्हे सीखने में लोग रूचि ही दिखा रहे हैं इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्रों के आ जाने से अब और ज्यादा समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं। आज एक इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्र से अनेकों वाद्य यंत्रों की ध्वनि निकाली जा सकती है। और निकाली भी जा रही हैं। परनतु इसका असर उन परम्परागत वाद्यों के वाद्यकों पर पड़ रहा है। जिनके समक्ष अब बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो गई है।

इसके अतिरिक्त इन इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्रों का युवाओं में लोकप्रिय होने का यह भी कारण है कि यह वाद्य यंत्र आज परम्परागत वाद्यों से कम मूल्य पर उपलब्ध है, जबकि परम्परागत वाद्य आज भी अच्छे खासे दामों मे ही उपलब्ध होते हैं। दूसरे इन वाद्य यंत्रों पर अपेक्षाकृत कम समय में ही निपुणता प्राप्त की जा सकती है।

इसी क्रम में आज अनेक इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का प्रयोग विद्यार्थी अभ्यास के लिए करते हैं। यथा– इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा, ताल–माला, ताल–लहरा इत्यादि अभ्यास के लिए तो यह वाद्य कुछ हद तक ठीक हैं लेकिन इन वाद्यों के साथ कलाकार मंच पर प्रदर्शन नही कर सकता है क्योंकि उसमें (इलेक्ट्रॉनिक वाद्य) यह समझ ही नहीं होगी कि कग लय बढ़ानी है, कब कम करनी है। आज इन वाद्यों को अभ्यास के काम में तो लाया जा सकता है परन्तु

यह भी सत्य है कि कोई भी इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा, तालमाला इत्यादि वाद्य चाहे कितना भी अच्छा बना हो असल की जगह नहीं ले सकता।

जहॉ साधारण तथा वादक न उपलब्ध को पाये वहां पर इनका प्रयोग ठीक है परन्तु जो वाद्यों की अपनी मौलिकता है, और उसके साथ एक बैठक, एक अनुशासन है, उसका इन इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्रों के साथ लोप हो जाता है।

एक समय था जब यह कहा जाता था कि जिसे तानपुरा मिलाना आ गया समझो आधा संगीत उसे आ गया लेकिन आज तो स्थिति यह है कि एक बटन दबाया और इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा बजने लगा। मगर इसने संगीत को बहुत हानि पहुॅचाई है आज विद्यार्थियों की बात छोड़ दें, तो बहुत सारे ऐसे शिक्षक भी मिल जाएंगें जो अपनी कक्षाएं इसी इलेक्ट्रॉनिक तानपुरे को बजाकर ही लेते हैं, क्योंकि उन्हे तानपुरा मिलाना ही नहीं आता। ऐसे में विद्यार्थी किस राह पर जाएगा?

वैश्वीकरण से भारतीय संगीत को हुई हानियां :– इस प्रकार हमने उपरोक्त विवरण में देखा कि आज वैश्वीकरण के फलस्वरूप हमारे भारतीय संगीत को अनेक हानियां हो रही हैं। आजकल श्रोताओं के पास समय कम रहता है। जिसका असर संगीत के कार्यक्रमों पर पर्याप्त रूप से दिखाई देता है। आज गायन–वादन एवं नृत्य का प्रारूप निश्चित सा हो गया है। यथा–आधे–एक घण्टे के कार्यक्रम में कितनी देर अलाप होगा, कितनी तानें ली जाएंगी अथवा जितनी देर झाला बजेगा इत्यादि सब निश्चित रहता है। वैश्वीकरण से बाजारीकरण की प्रवृत्ति का आगमन हुआ जिसके परिणामस्वरूप संगीत को भी एक ''उत्पाद'' के रूप में देखा जाने लगा है। आज के भारतीय संगीत कारों ने विदेशी संगीत कारों के साथ मिलकर प्रयोग करने की प्रवृत्ति बढ़ी है हालाकि कई प्रयोग सफल भी रहे हैं। परन्तु इस प्रवृत्ति के

बढ़ने से fusion के नाम पर ''परम्परा और धरोहर'' के नष्ट होने की संभावना बढ़ी है। आज मिश्रण का प्रचलन अधिक दिखाई देता है। जिससे भारतीय संगीत की शुद्धता प्रभावित हुई है, जो भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं ही है।

भारतीय संगीत में प्रयुक्त इलेक्ट्रानिक वाद्य

तालोमीटर :– हिन्दुस्तान में सर्वप्रथम 1978 में इलेक्ट्रॉनिक ताल यंत्र तालोमीटर का निर्माण राजनारायण द्वारा किया गया। दक्षिण भारत की तालों को हस्तक्रिया द्वारा जिस प्रकार प्रदर्शित किया जाता है, यह उपकरण उसी क्रिया को प्रदर्शित करता है। यह अपनी तरह का अकेला वाद्ययंत्र है जो ताल क्रिया के प्रदर्शन हेतु बनाया गया है।

इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा :– तानपुरा एक तत् वाद्य की श्रेणी में आने वाला वाद्य है। परन्तु वर्तमान समय में ऐसा कोई भी शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम नही होता जहां पर इस वाद्य की आवयकता महसूस न की जा रही हो। इलेक्ट्रानिक तानपुरा लगभग 1940 के समय में प्रचार प्रसार में लाया गया।

इलेक्ट्रानिक तम्बूरा :– 1979–80 में विद्युत तम्बूरा सारंग का आविष्कार हुआ। इसके प्रारंभिक ढ़ांचे में कृत्रिम ध्वनिका प्रयोग किया गया। किन्तु बाद के ढ़ाचो में वास्तविक तम्बूरा की आवाज को माइक्रोचिप में संग्रहित कर इस्तेमाल किया गया। आधुनिक विद्युत तम्बूरों में दोनो ही प्रकार की सुविधा दी गयी है। प्रयोगकर्ता यदि चाहे तो परम्परागत तरीके से स्वरों को छेड़े जाने वाली ध्वनि का चयन कर सकता है अन्यथा सुरपेटी के समान निरन्तर ध्वनि पद्धति द्वारा स्वरों को बजा सकते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक तबला :– 1988 में विद्युत तबला 'तालमाला' का आविष्कार हुआ। सर्वप्रथम पी0टी0 13 तत्पश्चात पी0टी0 24 ढॉचे बनाये गये। ये भी आयताकार लकड़ी के बाक्स द्वारा

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

निर्मित किये गये। इस विद्युत तबले को बजाने के लिए विभिन्न प्रकार के स्विचों का प्रयोग किया जाता है। स्विच ऑन करने के बाद ताल और लय का चयन कर मनोवांछित स्वर में मिलाकर प्रारम्भ करने के लिए बटन दबाते ही यह स्वतः बजने लगता है।

इलेक्ट्रॉनिक वीणा :– पारम्परिक वीणा की ध्वनि धीमी होती है एवं इसकी संरचना कलात्मक एवं कोमल होती है। जिसके कारण इस की परिवहनीयता प्रभावित होती है। वीणा वादक इन समस्याओं से जूझते हुए कॉन्टेक्ट माइक्रोफोन्स का प्रयोग करते हैं।

सुनादमाला :– 1993 में विद्युत लहरा 'सुनादमाला' का आविष्कार हुआ। यह यंत्र विभिन्न प्रकार की हिन्दुस्तानी तालों के साथ बजने वाले लगभग 200 धुनों के लहने बजा सकता है।

स्वरूपिनी डिजिटल स्वरमण्डल :– ऐसे बहुत से गायक हैं जो प्रर्दशन के दौरान स्वर मण्डल का प्रयोग करते हैं। पारंपरिक स्वरमण्डल में 16 या 24 तार होते हैं जिन्हें प्रस्तुति के रागानुकूल बहुत ध्यान से मिलाना पड़ता है।

सिन्थेजाईजर :– यह एक विदेशी वाद्य है जिसने आधुनिकि संगीत में क्रान्ति ला दी है। इस पर बहत्तर स्वर स्थान एक साथ सुने जा सकते हैं। देखने में यह पियानो की तरह है। इसके द्वारा विभिन्न प्रकार की ध्वनियां तथा विभिन्न वाद्य यत्रों की ध्वनियॉ निकाली जा सकती है।। जो आवाज हम सोचते हैं, वही आवाज इस पर हम निकाल सकते हैं। इस पर रिद्म बाक्स भी लगा रहता है। जिसके द्वारा विभिन्न तालों को विभिन्न लयों में सेट किया जा सकता है।

इलेक्ट्रानिक ऑक्टोपैड :– यह इलेक्ट्रानिक वाद्य यंत्र वर्तमान समय में अवनद्य एवं घनवाद्य के समस्त वाद्यों को अपने आप में समाहित कर लिया हैं। प्रायः आज यह देखने को मिलता है कि इस वाद्य में विभिन्न प्रकार के धुनों को निकाला जा सकता है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

इलेक्ट्रॉनिक ड्रम (हाइड्रोलिक) :– भारतीय वाद्य के विकास के क्रम में विद्युत उपकरणों द्वारा बनाये गये ये वाद्य 21वें सदी की देन है इस प्रकार के वाद्य यंत्र में विभिन्न प्रकार के वाद्यों को इलेक्ट्रॉनिक रूप प्रदान करके प्रयोग किया जा रहा है। प्रायः यह एक विदेशी वाद्य है परन्तु भारतीय संगीत में भी इसका प्रयोग वर्तमान समय में बखूबी से किया जा रहा है। तथा इस वाद्य को बजाने के लिए दो छड़ी या हथेली के माध्यम से अथवा कीपैड के माध्यम से मन चाहे ध्वनि को निकाल सकते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक डीजे :– इलेक्ट्रॉनिक डीजे का उद्भव एवं विकास वर्तमान समय में तथा इस चकाचौंध की दुनिया में पारंपरिक बैण्ड को दरकिनार करके बनाया गया है।

इलेक्ट्रॉनिक टीचर :– विद्युत संचालित वाद्य यंत्र निर्माता रेडाल ने आज विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का निर्माण करते हुए इलेक्ट्रॉनिक टीचर का भी निर्माण किया है, जो घर बैठे आप को स्वर लय ताल की जानकारी आसानी से प्रदान कर सकता है। मात्र एक बटन दबाने से ही आप को स्वर की बारीकियां तथा लय की जानकारी आसानी से प्रदान की जा सकती है। तथा आपका स्वर लय एवं ताल सही है कि नहीं तुरन्त आपको बताया जा सकता है।

निष्कर्ष

मै इस निष्कर्श पर पहुॅचा हूॅ कि विभिन्न संगीतपयोगी वैज्ञानिक उपकरणों का संगीत के क्षेत्र में सकारात्मक और सहजता से प्रयोग होना आवश्यक है परन्तु आज भी अनेक संगीतज्ञ कलाकार और गुरू टेक्नोलॉजी के प्रयोग को अधिक महत्व नहीं देते हैं और संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग को लेकर उनका दृष्टिकोण सकारात्मक नही है। यह बात

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

सही है कि संगीत एक गुरूमुखी विद्या है और गुरू के सानिध्य में रहकर संगीत की बारीकियों और गुरू की शैली को भलिभांति आत्मसात् किया जा सकता है। प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए तो गुरू का सानिध्य अत्यन्त आवश्यक है। और जब विद्यार्थी उच्च स्तर पर पहुँच जाता है तो परिस्थितियों के अनुरूप इन्टरनेट पर उपलब्ध दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से भी गुरू द्वारा दिए गए ज्ञान को आत्मसात् कर सकता है। इसी प्रकार ई–बुक्स, ई–लाईब्रेरी तथा ई–युनिवर्सिटी की अवधारणा भी संगीत शिक्षा देने के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकती है। इन्टरनेट की विभिन्न वेबसाइट्स पर संगीत संबंधी जानकारियां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। समय–समय पर संगीत विद्वानों द्वारा इन जानकारियों को अपडेट करके नवीनी पीढ़ी को संगीत का ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी एवं वैज्ञानिक उपकरणों का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक है जिस पर बहुत कम अध्ययन हुआ है। इस विषय पर अध्ययन की पर्याप्त संभावनाएं निर्धारित है। मेरा यह विश्वास है कि तकनीकी के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले हमारे पुराने पीढ़ी के कुछ गुरू और कलाकार भी इस आधुनिक तकनीक से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े है और जब यह कलाकार सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ पूर्ण रूप से इस परिवर्तन को स्वीकार करेंगे तभी प्रौद्योगिकी और संगीत का समन्वयित रूप निखर कर समाज के सामने आ सकेगा, जिसकी आज के सामाजिक परिवेश में नितान्त आवश्यकता है और तभी विकास के नए–नए क्षेत्र भी खुलेगें और संगीत अपने उच्च शिखर पर पहुँचेगा।

सन्दर्भ सूची :–

1. संगीत संचेतना, वैश्वीकरण के दौर में संगीत, डॉ मुकेश गर्ग, पृ0.सं0. 84
2. पं0 विष्णुनारायण भातखण्डे एवं पं0 ओंकार नाथा ठाकुर का सांगीतिक चिन्तन, डा0 अकांक्षी, पृ0.सं0 189
3. भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग, डॉ0 अनीता गौतम।
4. हिन्दुस्तानी संगीत परिवर्तन शीलता, डॉ0 असित कुमार बैनर्जी।
5. भारतीय संगीत की वर्तमान समस्याएँ, डॉ0 महेश सिंघल।
6. भारतीय संगीत विरासत व भविष्य, नव भारत टाइम्स नई दिल्ली।

*****